।। श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ।।

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

वैष्णव-सन्ध्या

लेखक
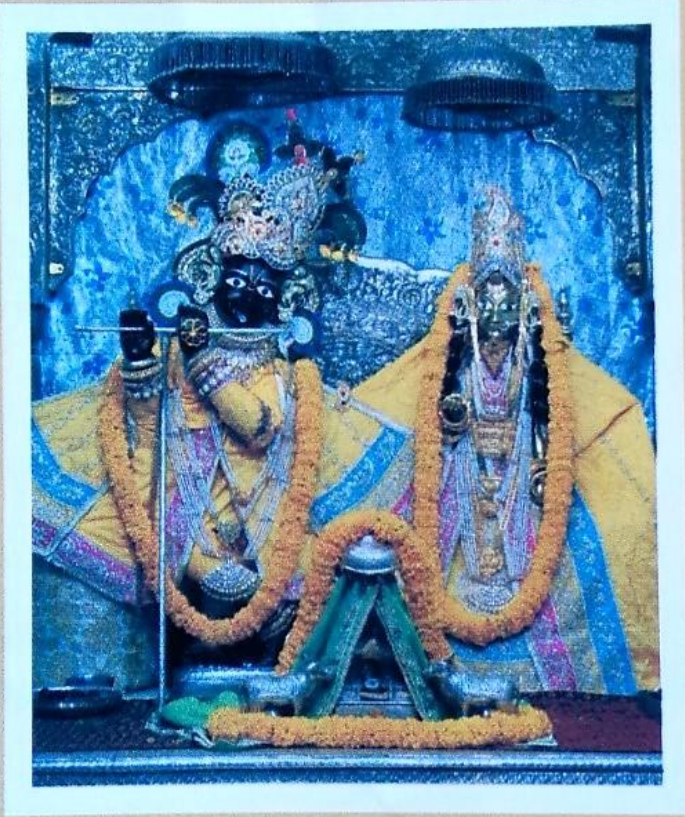
गोलोकवासी पं. श्रीव्रजवल्लभशरण

वेदान्ताचार्य-पञ्चतीर्थ, वृन्दावन

सम्पादक

गोलोकवासी पं. गोविन्ददास 'सन्त'

धर्मशास्त्री, पुराणतीर्थ

सम्पादकीय

''श्रीनिम्बार्क ग्रन्थमाला'' के वैष्णव-सन्ध्या नामक पुष्प का यह पंचम संस्करण आपकी सेवा में प्रस्तुत करते हुए हमें महती प्रसन्नता है-

बन्धुजनों! वैष्णवों के ये मुख्य तीन कर्म हैं--
प्राणीमात्र पर दया, भगवद्भक्ति और वैष्णव सेवा। जैसे-

वैष्णवानां त्रयं कर्म दया जीवेषु नारद ।
श्रीगोविन्दे परा भक्तिः तदीयानां समर्चनम्।।

इनमें भगवत्सेवा के योग्य मानव तभी बनता है, जबकि प्रातः ब्राह्म मुहुर्त में उठकर शौच-स्नानादि से निवृत्त हो सन्ध्यावन्दनादि आवश्यक नित्य कर्म करले। शास्त्रों में बताया है ''देवो भूत्वा देवं यजेत्'' देव के समान बनकर देवपूजा करनी चाहिये। ये तभी होगा जब सन्ध्योपासन कर लेंगे। श्रुति स्मृतियों की आज्ञा है--

अहरहः सन्ध्यामुपासीतः (वेदः)
सन्ध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हसर्वकर्मसु । (दक्षः)

इस पुष्प का चतुर्थ संस्करण भी समाप्त हो चुका था, वैष्णव भक्तजनों के लाभार्थ अब इसका यह पंचम संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है, वैष्णव भक्तजन इसको उपयोग में लेकर लाभ उठायेंगे।

-पं. गोविन्ददास 'सन्त'

प्रकाशन सेवा-सोमाणी ट्रेडिंग कम्पनी
नई मण्डी, घड़साना, जि० श्रीगंगानगर मो. 9982858857

अथ संक्षिप्त

वैष्णव-सन्ध्या

प्रातःकाल स्नान कर, शुद्ध वस्त्र पहिन, सन्ध्या करने के लिये शुद्ध भूमि पर आसन बिछाकर **ॐ आधार शक्ति कमलासनाय नमः** इस मन्त्र को पढ़कर धेनु मुद्रा दिखाते हुये आसन पर बैठ जावे।

तदनन्तर बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की अंगुलियों से आसन पर जल छिड़कते हुए निम्नलिखित मन्त्र से आसन शुद्धि करे।

आसन शुद्धि :-

ॐ पृथ्वीत्वयाधृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय माँ देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

इसी प्रकार शरीर के मस्तक आदि समस्त अङ्गों पर जल छिड़कते हुये शरीर शुद्धि करे।

शरीर शुद्धि :-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

शिखा बन्धन :-

मूल मन्त्र (गुरु प्रदत्त मन्त्र) से शिखा बन्धन करे।

फिर बायें हाथ में गोपीचन्दन घिसकर शलाका से उसमें षट्कोण चक्र

बनाकर उसमें **क्लीं** यह काम बीज लिखकर फिर उसको दाहिने हाथ की हथेली से ढांक कर 10 बार मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित करके निम्नलिखित स्थानों पर उर्ध्वपुण्ड्र द्वादश तिलक करे।

द्वादश स्थान

1.	ॐ केशवाय नमः	(ललाट पर)
2.	ॐ नारायणाय नमः	(पेट पर)
3.	ॐ माधवाय नमः	(हृदय पर)
4.	ॐ गोविन्दाय नमः	(कण्ठ पर)
5.	ॐ विष्णवे नमः	(दाहिनी कोख पर)
6.	ॐ मधुसूदनाय नमः	(दाहिनी भुजा पर)
7.	ॐ त्रिविक्रमाय नमः	(दाहिने कन्धे पर)
8.	ॐ वामनाय नमः	(बायीं कोख में)
9.	ॐ श्रीधराय नमः	(बायीं भुजा पर)
10.	ॐ हृषीकेशाय नमः	(बायें कन्धे पर)
11.	ॐ पद्मनाभाय नमः	(पीठ पर)
12.	ॐ दामोदराय नमः	(कटि भाग में)

हथेली पर लगे हुये चन्दन को जल से भिगोकर **वासुदेवाय नमः** यह मन्त्र पढ़ कर शिखा (चोटी) पर पोंछ देवे।

इसके बाद दाहिने हाथ में अथवा आचमनी में जल लेकर निम्नलिखित संकल्प करे ।

संकल्प

ॐ तत्सदद्यैतस्यब्रह्मोह्नि द्वितीयपरार्द्धे-श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत-ब्रह्मावर्तैक-देशे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे श्रीमन्नृपति विक्रमार्कराज्यादमुक वत्सरे, अमुक शके, अमुक अयने, अमुक ऋतौ, अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक वासरे, अमुक नाम, अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं मम कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक दुरितोपशमनार्थं श्रीराधासर्वेश्वर प्रीत्यर्थञ्च प्रातः सन्ध्योपासनं करिष्ये ।

आचमन- दाहिने हाथ की हथेली में थोड़ा-थोड़ा जल लेकर निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा तीन आचमन करे ।

1 ॐ केशवाय नमः 2 ॐ नारायणाय नमः

3 ॐ माधवाय नमः

प्राणायाम- प्राणायाम के तीन भेद हैं । पूरक, कुम्भक और रेचक ।

1. पूरक- दाहिने हाथ के अंगूठे से नासिका के दाहिने स्वर को बन्द कर बायें स्वर से स्वांस द्वारा वायु को धीरे-धीरे चढ़ाने को पूरक कहते हैं ।

विधि- इसमें क्लीं इस बीज मन्त्र का 16 बार उच्चारण

करें।

2. कुम्भक– दाहिने स्वर को तो अंगूठे से दबाये रक्खें फिर मध्यमा और अनामिका इन दोनों अंगुलियों से बायें स्वर को भी बन्द कर ले अर्थात् स्वांस को न चढ़ावे और न उतारे ज्यों का त्यों ही रहने दे इसको कुम्भक कहते हैं।

विधि– इसमें उसी **क्लीं** बीज का 64 बार उच्चारण करे।

3. रेचक– नासिका के दाहिने स्वर से अंगूठे को हटा करके धीरे–धीरे स्वांस को उतारने का नाम रेचक है।

विधि– इसमें भी उसी **क्लीं** मन्त्र का 32 बार उच्चारण करे।

अघमर्षण – दाहिने हाथ में जल लेकर उसको बायें हाथ से ढांक कर उसको तीन बार मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित कर नासिका के दाहिने छिद्र के लगाकर मन में यह भावना करे कि मेरे भीतर जो पाप थे वे सबके सब इस जल में आ गये हैं, तब फिर **'अस्त्राय फट्'** यह मन्त्र बोलकर उस जल को अपने बायें भाग में छोड़ दें और चित्त में यह कल्पना करे कि वज्र शिला पर डालकर मैंने इन पापों का परिहार कर दिया।

मार्जन – बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की अंगुलियों से निम्नलिखित वाक्यों द्वारा शरीर के अंगों पर प्रोक्षण करे अर्थात् जल से छींटा दे।

ॐ दामोदराय नमः शिरसि। **ॐ संकर्षणाय नमः** मुखे।

ॐ वासुदेवाय नमः, **ॐ प्रद्युम्नाय नमः** घ्राणयोः।

ॐ अनिरुद्धाय नमः, ॐ पुरुषोत्तमाय नमः नेत्रयोः।
ॐ अधोक्षजाय नमः, ॐ नृसिंहाय नमः श्रोत्रयोः।
ॐ अच्युताय नमः नाभौ। ॐ जनार्दनाय नमः हृदये।
ॐ हरये नमः, ॐ विष्णवे नमः हस्तयोः।
ॐ उपेन्द्राय नमः सर्वाङ्गे।

भूत शुद्धि – दाहिने हाथ में अथवा आचमनी में जल लेकर– **ॐ अद्य श्रीमत्सर्वेश्वरकृष्णाराधनयोग्यतासिध्यर्थं भूत-शुद्धिमहं–करिष्ये** इस वाक्य धारा से भूत शुद्धि का संकल्प करके जल छोड़ दे।

फिर कच्छप[1] मुद्रा से हृदय में स्थित दीपक कर्णिका के आकार वाली रूपी ज्योति को परंतेज में, अर्थात् ब्रह्माण्डस्थ सहस्रदल–कमल में स्थित परमात्मा में लगाकर पृथ्वी आदि 25 तत्त्वों[2] को उसी में लीन मान कर **'यं'** इस वायु बीज को 16 बार जपते हुये नासिका के बायें स्वर से स्वांस चढ़ावें। फिर उसी **'यं'** का 64 बार जप करते हुये नासिका के दोनों स्वरों को बन्द कर स्वांस रोके।

---

1. बायें हाथ को ओंधा करके दाहिने हाथ को भी उस पर ओंधा रखिये। दोनों हाथों की तर्जनियों से कनिष्ठिकाओं को जोड़ कर नीचे की ओर कर लीजिये तथा मध्यमा और अनामिकाओं को सीधा रखिये। कच्छप मुद्रा बन जायगी।
2. मूलप्रकृति, पञ्चमहाभूत, पञ्चतन्मात्रा, दश इन्द्रियां और मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार ये ही 25 तत्त्व हैं।

उस समय मन में ऐसी भावना करनी चाहिये कि अब मेरा यह प्राकृत शरीर वायु के द्वारा शोषण किया गया। फिर उसी वायु बीज 'यं' को 32 बार उच्चारण कर धीरे-धीरे श्वास को उतारे ।

फिर देह में स्थित दूषित भावना को नष्ट करने वाले रक्त वर्ण अग्नि बीज 'रं' इस मन्त्र का 16 बार जप करते हुये नासिका के दाहिने स्वर से स्वांस को चढ़ावे। फिर दोनों स्वरों को बन्द कर उसी 'रं' बीज का 64 बार जप करता हुआ कुम्भक करे और देह में स्थित दूषित वृत्तियों को नष्ट हो जाने की भावना करे। तदनन्तर उसी 'रं' बीज को 32 बार जपते हुये स्वांस को उतार दे।

इसके पश्चात् श्वेत् वर्ण वाले चन्द्र बीज 'ढं' इस मन्त्र को 16 बार जपते हुए नासिका के दाहिने स्वर को बन्द कर बायें स्वर से धीरे-धीरे स्वांस चढ़ावे और उस बीज के ललाट देशीय चन्द्रमा में लीन होने की भावना करे। फिर शुक्ल वर्ण वरुण बीज 'वं' को 64 बार जपते हुए कुम्भक करे, उस समय अमृतमय वृष्टि की भावना कर यह कल्पना करे कि अब यह शरीर भगवान् की सेवा के योग्य संशुद्ध हो गया। पश्चात् पीले वर्ण वाले पृथ्वी बीज 'लं' इस मन्त्र को 32 बार जपते हुए नासिका के दाहिने स्वर को खोल कर धीरे-धीरे स्वांस को उतारे ।

फिर निम्नलिखित श्रीगोपाल गायत्री द्वारा करन्यास, अङ्गन्यास आदि करे।

करन्यास

ॐ गोपालाय – अंगुष्ठाभ्यां नमः।

विद्महे – तर्जनीभ्यां नमः।

गोपीवल्लभाय – मध्यमाभ्यां नमः।

धीमही – अनामिकाभ्यां नमः।

तन्नः कृष्णः – कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

प्रचोदयात् – करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

ॐ गोपालाय – हृदयाय नमः।

विद्महे – शिरसे स्वाहा ।

गोपीवल्लभाय – शिखायैवषट्।

धीमहि – कवचायहुम्।

तन्नः कृष्णः – नेत्रत्रयाय वौषट्।

प्रचोदयात् – अस्त्राय फट्।

[1]गायत्री आवाहन – दोनों हाथों की अञ्जली जोड़ बड़े नम्र भाव से निम्नलिखित मन्त्र द्वारा गायत्री आवाहन करे अर्थात् बुलावे। मानसिक भावना से एक सुन्दर आसन की कल्पना करते हुये उस पर पधरावे।

आगच्छ वरदे देवि ! त्रिपदे कृष्णवादिनी ।
गायत्रिच्छन्दसां मातः कृष्णयोनि नमोस्तु ते ।।

तदनन्तर श्रीगोपाल गायत्री मन्त्र द्वारा यथावकाश जप करे।

श्रीगोपाल गायत्री

ॐ गोपालाय विद्महे, गोपीवल्लभाय धीमहि, तन्नः कृष्णः प्रचोदयात्।

---

1. गायत्री का आवाहन करके निम्नलिखित ये 24 मुद्रायें हाथों से बना–बना कर दिखावे, पश्चात् जप करे।

सुमुखं संपुटं चैव विततं विस्तृतं तथा।
द्विमुखं त्रिमुखं चाथ चतुष्पंचमुखं तथा ।।
षणमुखाऽधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा।
शकटं यमपाशं च ग्रन्थितं चोन्मुखोन्मुखम् ।।
प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्य–कूर्म–वराहकम्।
सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा ।।

जप के अनन्तर–

सुरभिज्ञानवैराग्ये योनिः शङ्खोऽथ पंकजम्।
लिङ्गं निर्वाणकं चैव जपान्तेष्टौ प्रदर्शयेत् ।।

जप के अनन्तर निम्नलिखित मन्त्र से गायत्री का विसर्जन अर्थात् जिस प्रकार बुलाया उसी प्रकार जाने के लिये भी बड़े नम्र भाव से प्रार्थना करे।

विसर्जन :-

उत्तमे शिखरे जाता भूम्यां पर्वतमूर्धनि ।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम् ।।

सूर्याघ्र्य प्रदान - हाथ में पुष्प लेकर सूर्य मण्डल स्थित श्रीसर्वेश्वर नारायण का निम्नलिखित श्लोक द्वारा ध्यान करे।

ध्यान :-

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती ।
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः ।।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान्किरीटी ।
हारीहिरण्मयवपुर्धृतशंखचक्रः ।।

इसके अनन्तर चाँदी ताम्बा आदि के स्वच्छ अर्घ्यपात्र को चन्दन पुष्पादि युक्त जल से पूरित कर मूल (श्रीगुरु प्रदत्त) मन्त्र का उच्चारण करके

'सूर्यमंडलस्थाय सर्वेश्वर-श्रीकृष्णाय इदमर्घ्यं समर्पयामि'

यह बोल कर तीन अर्घ्य श्रीसूर्यदेव को अर्पण करे।

यह आठ मुद्रा दिखाकर विसर्जन करे।
सूचना - मुद्राएँ जानना हो तो पं० श्रीगोविन्ददासजी 'सन्त' द्वारा संग्रहीत ''सन्ध्योपासन पद्धति'' देखें। -लेखक

प्रार्थना :-

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव ! परिपूर्णं तदस्तु मे ।।

श्रीमुकुन्द - मन्त्र - जप - विधिः

विनियोग-

ॐ अस्य श्रीमुकुन्दशरणमन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीमुकुन्द परमात्मा देवता । श्रीं बीजम्। रमादेवी शक्तिः। प्रपदनंकीलकम्। श्रीभगवदनुशासन-पालने विनियोगः।

श्रीनारदऋषयेनमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे। श्रीमुकुन्दपरमात्मदेवतायै नमो हृदि। श्रींबीजाय नमो गुह्ये। रमादेवीशक्तये नमः पादयोः। प्रपदनं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास :-

श्रीमद् अंगुष्ठाभ्यां नमः। मुकुन्दचरणौ तर्जनीभ्यां नमः। सदा मध्यमाभ्यां नमः। शरणं अनामिकाभ्यां नमः। अहं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। प्रपद्ये करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास :-

श्रीमद् हृदयाय नमः। मुकुन्दचरणौ शिरसे स्वाहा। सदा शिखायैवषट्। शरणं कवचाय हुम्।
अहं नेत्राभ्यां वौषट्। प्रपद्ये अस्त्राय फट्।

पदन्यास :-

श्रीमन्मुकुन्दचरणौ नमो मस्तके । **सदा** नमो वक्त्रे । **शरणं** नमो हृदि । **अहं** इति नाभौ । **प्रपद्ये** नमो गुह्ये ।

अवरोहन्यास :-

प्रपद्ये इति गुह्ये । **अहं** इति नाभौ । **शरणं** इति हृदि । **सदेति** वक्त्रे । **श्रीमन्मुकुन्दचरणौ** इति मस्तके ।

वर्णन्यास :-

श्रीं मस्तके । **मं** ललाटे । **मुं** भ्रूमध्ये । **कुं** दक्षिण कर्णे । **दं** वाम कर्णे । **चं** दक्षिण नेत्रे । **रं** वाम नेत्रे । **णौं** दक्षिण नासायाम् । **सं** वामनासायाम् । **दां** मुखे । **शं** कण्ठे । **रं** हृदि । **णं** नाभौ । **मं** दक्षिण कुक्षौ । **हं** वाम कुक्षौ । **प्रं** गुह्ये । **पं** जान्वोः । **द्यें** पादयोः ।

ध्यानम् :-

श्यामावदातं करुणार्द्रनेत्रं प्रसन्नवक्त्रं स्वजनैकजीवनम् ।
श्रीवत्सचिह्नं गलकौस्तुभं भजे
श्रीमन्मुकुन्दं प्रणतार्तिनाशकम् ।।

श्रीमुकुन्द मन्त्र

श्रीमन्मुकुन्द चरणौ सदाशरणमहं प्रपद्ये ।

इस प्रकार ध्यान करके धेनु मुद्रा दिखाते हुए यथा शक्ति जप करे ।

श्रीगोपाल मन्त्र - जप - विधि-

विनियोग :-

ॐ अस्य श्रीगोपालाष्टादशाक्षरमन्त्रस्य, श्रीनारद ऋषिरनुष्टुप् छन्दः, श्रीकृष्ण-परमात्मा-देवता, क्लीं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, ह्रींकीलकम् श्रीकृष्णप्रीत्यर्थेजपे विनियोगः।

नारद ऋषये नमः- (शिरसि)। गायत्री छन्दसे नमः (मुखे) श्रीकृष्णदेवतायै नमः (हृदि) क्लीं बीजाय नमः (गुह्ये) स्वाहा शक्तयै नमः (पादयोः) क्लीं कीलकाय नमः (सर्वाङ्गे)।

करन्यास :-

क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। कृष्णाय तर्जनीभ्यां नमः। गोविन्दाय मध्यमाभ्यां नमः। गोपीजन अनामिकाभ्यां नमः। वल्लभाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास :-

क्लीं हृदयाय नमः । कृष्णाय शिरसे स्वाहा। गोविन्दाय शिखायै वषट्। गोपीजन कवचाय हुम्। वल्लभाय नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।

पदन्यास :-

क्लीं नमो मूर्ध्नि। कृष्णाय नमो वक्त्रे। गोविन्दाय नमो हृदि। गोपीजनवल्लभाय नमः नाभौ। स्वाहा नमः पादयोः।

वर्णन्यास :-

क्लीं शिरसि। कृं ललाटे। ष्णां भ्रुवोः। यं नेत्रयो। गों

कर्णयोः। **विं** घ्राणयोः। **दां** मुखे। **यं** कण्ठे। **गों** स्कन्धयोः। **पीं** हृदिः। **जं** उदरे। **नं** नाभौ। **वं** गुह्ये। **ल्लं** आधारे। **भां** कट्याम्। **यं** ऊर्वौ। **स्वां** जानुनो। **हां** पादयोः।

इस प्रकार उपर्युक्त पाँचों न्यास करके पद्मासन[1] लगाकर मेरुदण्ड[2] को सीधा रखते हुये, दृष्टि को नासिका के अग्रभाग पर जमाकर तुलसी की माला से, हाथ को हृदय के पास रखते हुये तथा मन में युगल सरकार श्रीराधासर्वेश्वर श्रीकृष्ण का ध्यान करते हुए यथाशक्ति जप करे।

श्रीगोपाल मन्त्र

क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा।

जप के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र द्वारा अपने किये हुये जप को भगवान् श्रीराधासर्वेश्वर के अर्पण करे।

ॐ गुहय्यातिगुहय्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव ! त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः॥

---

1. बायें पैर को दाहिने पैर की जंघा पर और दाहिने पैर को बायें पैर की जंघा पर लगाकर बैठने को पद्मासन कहते हैं।
2. पीठ की हड्डी।

॥ श्रीराधासर्वेश्वरार्पणमस्तु ॥

सन्ध्या सम्बन्धी दो - शब्द

विप्रो वृक्षस्तस्य मूलं च सन्ध्या
वेदाः शाखा धर्म–कर्माणि पत्रम्।
तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयं
छिन्ने मूले नैव शाखा न प्रत्रम्।।

विप्र रूप वृक्ष की मूल (जड़) सन्ध्या है, वेद शाखा और धर्म कर्मादि समस्त साधन पत्र (पत्ते) हैं अतएव मूल (सन्ध्या) की यत्न पूर्वक रक्षा करनी चाहिये अर्थात् सन्ध्योपासन नित्य करना चाहिये। यदि मूल ही छिन्न–भिन्न (नष्ट – भ्रष्ट) हो जाय तो फिर वेद रूप शाखा और धर्म कर्मादि साधन कहाँ से बच पावेंगे ।

सन्ध्या काल निर्णय

उत्तमा तारकोपेता मध्यमा लुप्ततारका ।
अधमा सूर्यसहिता प्रातः सन्ध्या त्रिधा स्मृता ।।
उत्तमा सूर्यसहिता मध्यमा लुप्तभास्करा ।
अधमा तारकोपेता सायं सन्ध्यास्मृता ।।

* * *

पंचमावृत्ति	वि0 सं0 2065	न्यौछावर
2000	श्रीगुरु पूर्णिमा महोत्सव	3) रु0

प्रकाशक

अ0 भा0 श्रीनिम्बार्काचार्यपीठस्थ शिक्षा समिति

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद), पुष्करक्षेत्र

किशनगढ, जि0 अजमेर (राजस्थान)